eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 02, October 2025

वर्तमान समय में छात्र–केंद्रित शिक्षण और वैयक्तिकरण की उपयोगिता

डॉ0 मधुप कुमार[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग) भारतीय महाविद्यालय फर्रुखाबाद (उ0प्र0)

Received: 21 Oct 2025. Accepted & Reviewed : 25 Oct 2025, Published: 31 Oct 2025

Abstract

मनुष्य सामाजिक प्राणी है और उसका सर्वोत्तम विकास समाज में रहकर ही संभव है। इस विकास की आधारशिला शिक्षा है, जो न केवल व्यक्तिगत प्रगति बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में भी सहायक होती है। गुणवत्तापरक शिक्षा के लिए प्रशिक्षित शिक्षक आवश्यक हैं, क्योंकि शिक्षा केवल ज्ञान का आदान–प्रदान नहीं बल्कि व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का माध्यम है। बदलते सामाजिक परिदृश्य में अब शिक्षा का केंद्र बिंदु विद्यार्थी है, जहाँ पारंपरिक शिक्षक–ज्ञानदाता की भूमिका के स्थान पर सुविधादाता की भूमिका को महत्व दिया जा रहा है।

कीवर्ड–– छात्र–केंद्रित शिक्षण , वैयक्तिकरण, सर्वांगीण विकास, अनुभव–आधारित, स्व–निर्देशित शिक्षण, गुरुकुल परंपरा आदि।

Introduction

पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में सभी विद्यार्थियों को एक ही ढाँचे में पढ़ाया जाता था, जबकि आधुनिक शिक्षा लचीली, अनुभव–आधारित और वैयक्तिकृत है। प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि, क्षमता और सीखने की गति को ध्यान में रखकर शिक्षण पद्धतियाँ विकसित की जा रही हैं।

छात्र–केंद्रित शिक्षण– छात्र–केंद्रित शिक्षण वह पद्धति है जिसमें विद्यार्थी केवल श्रोता न होकर सक्रिय अन्वेशक, प्रश्नकर्ता और सृजनकर्ता बनता है। जॉन ड्यूई ने शिक्षा को अनुभव–आधारित जीवन प्रक्रिया बताया। पियाजे ने निर्माणवाद का सिद्धांत देते हुए नए विचार और नवाचार पर बल दिया। कार्ल रोजर्स ने शिक्षा को व्यक्ति–केंद्रित मानते हुए शिक्षक को Facilitator और विद्यार्थी को Active Learner के रूप में परिभाषित किया। कोविड–19 के बाद छात्र–केंद्रित शिक्षा और भी प्रासंगिक हो गई है क्योंकि यह सामाजिक–भावनात्मक सीखने, अनुकूलनशीलता और तकनीकी प्रयोग को बढ़ावा देती है।

मुख्य सिद्धांत– इस दृष्टिकोण से विद्यार्थियों में सक्रिय सहभागिता, सकारात्मक भावना, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, सहयोग की भावना, स्वायत्तता, व्यक्तिगत अधिगम और दीर्घकालिक धारण क्षमता का विकास होता है। यह न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन को सुधारता है बल्कि विद्यार्थियों को आजीवन शिक्षार्थी भी बनाता है।

वैयक्तिकरण – प्राचीन गुरुकुल परंपरा से ही शिक्षा में वैयक्तिकरण का महत्व रहा है, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता था। 21वीं सदी में तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने इसे नई दिशा दी है। वैयक्तिकरण का अर्थ है प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं, रुचियों और क्षमताओं के अनुरूप शिक्षण की व्यवस्था करना।

शिक्षण की प्रमुख विधियाँ– छात्र–केंद्रित शिक्षा को साकार करने हेतु विभिन्न विधियाँ अपनाई जा सकती हैं

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 02, October 2025

सक्रिय भागीदारी – विद्यार्थी को सीखने की प्रक्रिया में शामिल करना।

विभेदीकरण – प्रत्येक छात्र की रुचि और क्षमता के अनुसार अलग–अलग तरीकों से शिक्षण।

सहयोगात्मक अधिगम – समूह कार्य और परियोजनाओं के माध्यम से सामाजिक कौशल का विकास।

प्रश्न पूछना और प्रयोग – विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने और समाधान खोजने के अवसर देना।

स्टेशन पद्धति – छोटे–छोटे समूहों में अलग–अलग गतिविधियों से शिक्षण।

फ़्लिप्ड क्लासरूम – कक्षा के बाहर अध्ययन सामग्री और कक्षा के समय में सक्रिय अधिगम।

वर्तमान समय में छात्र–केंद्रित शिक्षण और वैयक्तिकरण की उपयोगिता– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। वह समाज में रह के ही अपना सर्वोत्तम विकास कर सकता है। मनुष्य के सर्वोत्तम विकास के लिए शिक्षा अति आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य अपना, परिवार, समाज और देश का विकास कर सकता। गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती है। शिक्षा केवल जानकारी का आदान–प्रदान नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का साधन है। वर्तमान समय में देश की बदलती परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों का अपने शिक्षण में प्रयोग करने की आवश्यकता हो रही है। पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक को 'ज्ञानदाता' और विद्यार्थी को 'ग्राही' माना जाता था। परंतु आज की शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को केंद्र में रखकर तैयार की जा रही है। इसका उद्देश्य छात्रों के शैक्षिक विकास के साथ साथ उनके शारीरिक विकास, मानसिक विकास, आध्यात्मिक विकास, नैतिक विकास , कौशल, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और सहयोगात्मक दृष्टिकोण से सम्पन्न बनाना है।

छात्र–केंद्रित शिक्षण और वैयक्तिकरण का वर्तमान समय में शिक्षण में महत्वपूर्ण योगदान हैं। छात्र–केंद्रित शिक्षण और वैयक्तिकरण छात्रों के सर्वांगीण विकास में अत्यंत सहायक हो सकते हैं।

शिक्षा की पारंपरिक और आधुनिक अवधारणा

पारंपरिक शिक्षा– इसमें शिक्षक प्रमुख भूमिका निभाता है। वह जानकारी देता है और विद्यार्थी उसे ग्रहण करते हैं। यह पद्धति एकरूपी है, जहाँ सभी विद्यार्थियों को समान गति और समान पद्धति से पढ़ाया जाता है।

आधुनिक शिक्षा'– आधुनिक दृष्टिकोण में विद्यार्थियों को ज्ञान के केंद्र में रखा जाता है। हर विद्यार्थी की रुचि, क्षमता और सीखने की गति अलग होती है। अतः आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य शिक्षण को लचीला, व्यक्तिगत और अनुभव–आधारित बनाना है।

छात्र–केंद्रित शिक्षण– परिभाषा और महत्व–

परिभाषा–

छात्र–केंद्रित शिक्षण वह पद्धति है जिसमें विद्यार्थी सक्रिय भूमिका निभाता है। वह केवल श्रोता नहीं होता, बल्कि खोजकर्ता, प्रश्नकर्ता, विचारक और सृजनकर्ता होता है।

1. जॉन ड्यूई अनुसार –

"Education is not preparation for life (education is life itself-"

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 02, October 2025

(शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं है, बल्कि स्वयं जीवन है।)

जॉन ड्यूई का मानना था, कि शिक्षा तभी सार्थक हो सकती है जब वह विद्यार्थी के अनुभवों से जुड़ी रहे। उन्होंने शिक्षा को अनुभव–आधारित और छात्र–केंद्रित बनाने पर बल दिया।

2. जीन पियाजे के अनुसार

"The principal goal of education is to create men and women who are capable of doing new things] not simply repeating what other generations have done-"

शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञान रटाना नहीं, बल्कि नए विचार और नवाचार करने की क्षमता विकसित करना है।

जीन पियाजे के निर्माणवाद सिद्धांत के अनुसार विद्यार्थी स्वयं ज्ञान का निर्माण करता है, अतः शिक्षा प्रक्रिया विद्यार्थी–केंद्रित होनी चाहिए।

3. कार्ल रोजर्स के अनुसार

"The only person who is educated is the one who has learned how to learn and change-"

कार्ल रोजर्स ने शिक्षक को Facilitator और विद्यार्थियों को Active Learner माना। कार्ल रोजर्स के अनुसार के, सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थी की स्वायत्तता और व्यक्तिगत अनुभव अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

छात्र–केंद्रित शिक्षण छात्रों को शैक्षिक अनुभव के केंद्र में रखता हैं। छात्रों को उन्हें अपनी पसंद, सहयोग और वास्तविक परिस्थितियों की प्रासंगिकता के माध्यम से उन्हें सीखने का स्वामित्व लेने का अधिकार देता है। कोविड़ 19 महामारी के पाश्चात यह दृष्टिकोण पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया हैं। क्योंकि इसने पुनः जुड़ाव, सामाजिक–भावनात्मक शिक्षा (एस.ई.एल.) और शैक्षणिक सुधार को बढ़ावा दिया है। यह एक आवश्यक रणनीति बनी हुई हैं। क्योंकि शिक्षक विविध छात्र– छात्राओं की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहायक होते हैं।

Explorer Learning की Adaptive learning technologies, जैसे आभासी गणित और विज्ञान सिमुलेशन के लिए गणित तथ्य प्रवाह के लिए रिफ्लेक्स, प्रत्येक शिक्षार्थी को अपनी गति से आगे बढ़ने में मदद करने के लिए व्यक्तिगत रणनीतियों की अनुमति देती हैं।

छात्र–केंद्रित शिक्षण के प्रमुख सिद्धांत– शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण में छात्र–केंद्रित शिक्षण वातावरण बनाने के प्रमुख सिद्धांत निम्न लिखित हैं।

सहभागिता बढ़ाना– छात्र–केंद्रित शिक्षण में छात्र अपनी सीखने की प्रक्रिया में Learning by doing के सिद्धांत पर सक्रिय भागीदार बनते हैं, जिससे विषय–वस्तु में उनकी गहन सहभागिता और रुचि बढ़ती है।

सकारात्मक भावना विकसित करना – शिक्षक के द्वारा कक्षा में छात्र–केंद्रित शिक्षण वातावरण बनाने का प्रयास किया जाता हैं। छात्र–केंद्रित शिक्षण जिसके परिणाम स्वरूप छात्र अपनी रुचि के अनुसार शिक्षण को प्रभावित होने में सहयोग प्रदान करने हैं। शिक्षक के द्वारा जब शिक्षण में छात्रों का सहयोग लिया जाता है, और छात्रों की भावनाओं का सम्मान किया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप छात्रों ने सकारात्मक भावना का विकास होता हैं।

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 02, October 2025

सहभागिता की भावना विकसित करना – छात्र–केंद्रित शिक्षण में शिक्षक के द्वारा छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु छात्रों में सहभागिता की भावना का विकास किया जाता हैं।

आलोचनात्मक भावना विकसित करना – छात्र–केंद्रित शिक्षण में छात्र सकारात्मक , आलोचनात्मक भावना विकसित करना कौशल को विकसित करता है। क्योंकि छात्रों को प्रश्न पूछने, अपने विचार रखने, तार्किक चिंतन, अवधारणाओं का पता लगाने और स्वतंत्र रूप से समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

व्यक्तिगत शिक्षण – छात्र–केंद्रित शिक्षण में छात्रों को व्यक्तिगत निर्देश और सहायता प्राप्त होती है, जिससे वे अपनी गति से और अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं क्षमताओं और प्राथमिकताओं के आधार पर सीखने के अवसर प्राप्त होता है।

धारण क्षमता में वृद्धि – छात्र–केंद्रित शिक्षण में छात्र अपनी शिक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं है। छात्रों के द्वारा सीखने का प्रयास किया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप छात्रों में लम्बे समय तक जानकारी और अवधारणाओं को धारण करने की क्षमता में वृद्धि होती है।

स्वायत्तता का विकास– छात्र–केंद्रित शिक्षण में छात्र स्व–निर्देशित शिक्षण कौशल का विकास करता है। शिक्षा जीवन पर्यप्त चलने वाली प्रक्रिया के सिद्धांत पर है। छात्रों को अपनी शिक्षा का स्वामित्व लेने और आजीवन शिक्षार्थी बनने के लिए सशक्त बनाता है।

सहयोग की भावना विकसित करना – छात्र–केंद्रित शिक्षा में छात्रों को विभिन्न प्रकार की सहयोगात्मक गतिविधियों और समूह परियोजनाओं में एक साथ कार्य करना होता हैं। जिससे छात्रों में टीम और सहयोग की भावना विकसित होती है।

रचनात्मकता और नवाचार क्षमता को विकसित करना – छात्र–केंद्रित शिक्षण में छात्रों को विभिन्न प्रकार के अन्वेषण और प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न कार्ययोजनाओं को पूर्ण करने का प्रयास किया जाता हैं। जिससे छात्रों में रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा मिलता है।

शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार – छात्र–केंद्रित शिक्षण से संबंधित विभिन्न शोधों में ज्ञात हुआ है, कि छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से शैक्षणिक प्रदर्शन और समग्र छात्र सफलता में सुधार किया जा सकता है।

वैयक्तिकरण–

भारत में प्राचीन काल में शिक्षा गुरुकुल परंपरा के अनुसार प्रदान की जाती थी। गुरुकुल परंपरा में छात्रों पर गुरू के द्वारा व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता था। जिसके परिणामस्वरूप छात्रों का सामाजिक विकास, शैक्षिक विकास, मानसिक विकास, अध्यात्मिक विकास, नैतिक विकास एवं चारित्रिक विकास होता था। जॉन ड्यूई ने शिक्षा को अनुभव आधारित बनाने पर बल दिया। मारिया मांटेसरी ने बाल–केंद्रित शिक्षा पर कार्य किया। 21वीं सदी में तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने वैयक्तिकरण को नई दिशा दी है।

अर्थ–

वैयक्तिकरण का तात्पर्य है, कि शिक्षक के द्वारा शिक्षण में इस प्रकार का प्रयोग किया जाता है। जिससे प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, रुचियों, गति और क्षमताओं को ध्यान में रखकर किया जाए।

छात्र–केंद्रित शिक्षण और वैयक्तिकरण की शिक्षण विधियाँ

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 02, October 2025

छात्र–केंद्रित शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित शिक्षण विधियों को में शिक्षण में अपनाया जा सकता है।

1. सक्रिय भागीदारी– शिक्षा जीवन पर्यन्त निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के माध्यम से छात्रों का सर्वांगीण विकास संभव है। जिससे छात्र निरंतर सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में रहते है। शिक्षक का उद्देश्य हैं, कि बच्चे आजीवन सीखते रहें, तो इस प्रक्रिया में छात्रों की सहभागिता आवश्यक है। यहीं पर छात्र–केंद्रित शिक्षा की भूमिका आती है। जब छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत समस्याओं का समाधान करने और सीखने के अनुभवों में योगदान देने के अवसर मिलते है। वे अपने शिक्षक और सहपाठियों के साथ साझेदारी की भावना विकसित करते हैं। यह एक विचार–मंथन सत्र से शुरू करने जितना आसान हो सकता है।

2. विभेदीकरण– कोई भी दो व्यक्ति एक समान नहीं हो सकते हैं। यहाँ तक की जुड़वा बच्चों में भी एक समान के गुण नहीं होते हैं। सभी व्यक्तियों में विभिन्नता पाई जाती है। इसके आधार पर कक्षा में सीखने के लिए भी विभिन्न परिस्थितियों में शिक्षकों को विभेदीकरण प्रक्रिया का प्रयोग करना पड़ता है। शिक्षक के द्वारा छात्रों की रुचि, क्षमता, अधिगम आवश्यकताओं, रुचियों, सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों और बुद्धि के आधार पर अपनी कक्षा में विभिन्न शिक्षण विधियों को अपनाकर शिक्षण और अधिगम को व्यक्तिगत बनाकर विभेदित शिक्षा का प्रयोग करते हैं। शिक्षक के द्वारा छात्र–केंद्रित वातावरण सीखने में व्यक्तिगत उद्देश्य, प्रक्रियाएँ और अर्थ को ध्यान में रखते हुए शिक्षण किया जाता हैं। शिक्षक के द्वारा जानकारी को कई तरीकों से प्रस्तुत किया जाता है – जैसे इन्फोग्राफ़िक्स या तकनीक के माध्यम से।

3. सहयोग– छात्र–केंद्रित शिक्षण सहयोग पर आधारित होती हैं। छात्रों को रचनात्मक कार्यों के लिए शिक्षक के द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। छात्र–केंद्रित कक्षाएँ सहयोगात्मक परियोजनाएँ संचार में आत्मविश्वास और सामाजिक एवं भावनात्मक कौशल को मज़बूत करने के अवसर प्रदान करती हैं। बच्चों को सीखने के साथ– साथ मिलकर कार्य करने समय प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि सहयोग का लक्ष्य की भावनाओं को विकसित किया जाता है। छात्र–केंद्रित शिक्षण में शिक्षक के द्वारा सहयोग स्वतंत्र अभ्यास की तुलना में ज़्यादा शोरगुल वाला लग सकता है, लेकिन यह छात्रों को एक साथ कार्य करने और एक–दूसरे का समर्थन करने का अवसर देता है। उन्हें नई जानकारी एकात्रित करने तथा संसाधित करते हुए योजना बनाने और वार्तालाप करने का समय शिक्षक के द्वारा दिया जाना चाहिए।

4. प्रश्न पूछना और प्रयोग करना– छात्र–केंद्रित शिक्षण में सभी प्रकार के प्रश्न अच्छे प्रश्न होते हैं। प्रश्न पूछने की शिक्षण विधियों को शिक्षक के द्वारा प्रयोग करने के लिए छात्रों को इस प्रक्रिया को एक पूरे समूह के रूप में शुरू करना आवश्यक होता है। शिक्षक कों ज्ञान–आधारित प्रश्नों से प्रारंभ करना चाहिए तथा अंत में विश्लेषण से समाप्त करना चाहिए। शिक्षक कों छात्रों को अपने प्रश्नों पर गहराई से विचार करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, उन्हें पर्याप्त सोचने का समय दिया जाना चाहिए। छात्रों को शिक्षक के द्वारा संभावित समाधानों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित दिया जाता है। प्रश्न पूछने और प्रयोग करने से सीखना छात्रों के सक्रिय प्रक्रिया होती है।

5. स्टेशन– स्टेशन सिर्फ़ छोटे छात्रों के लिए नहीं हैं। स्टेशन सभी उम्र के छात्रों को छात्र–केंद्रित शिक्षा में भाग लेने के लिए अवसर प्रदान करते हैं। स्टेशन छात्रों को अलग–अलग अनुभवों को आज़माने का मौका देते हैं, इसलिए सीखना निष्क्रिय नहीं होता है। छात्र प्रेरित और रुचि रखते है। प्रत्येक स्टेशन एक

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 02, October 2025

नए कौशल या नई जानकारी को ग्रहण करता है। उन बच्चों को उनकी सीटों से उठाकर ऐसे स्टेशनों पर ले जाएँ जो छोटे समूहों में निर्देश देने से लेकर कक्षा में तकनीक के साथ स्वतंत्र कार्य तक, सब कुछ प्रदान करते हैं।

6. फ़्लिप्ड क्लासरूम– कक्षा को पलटने का क्या तत्पर है? जब शिक्षक शिक्षण को पलटते हैं, तो वे छात्रों को कक्षा के बाहर या गृहकार्य के लिए पढ़ने के लिए सामग्री और वीडियो व्याख्यान प्रदान करते हैं और सक्रिय शिक्षण को कक्षा के समय के लिए बचाकर रखते हैं। पलटी हुई कक्षा की रणनीति शिक्षकों को असाइनमेंट शुरू करने से पहले छात्रों की विचार प्रक्रियाओं और संभावित गलतफहमियों की एक झलक पाने का अवसर देती है। पारंपरिक व्याख्यानों और नोट्स लेने में कठिनाई वाले छात्र दबाव से मुक्त होकर आगे बढ़ते हैं। अगर उन्हें धीरे–धीरे आगे बढ़ना पड़े या बेहतर समझ के लिए भागों को दोहराना पड़े, तो घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। जैसे ही वे स्वयं अवधारणाओं को समझने लगते हैं, वे वापस जाकर प्रश्नों को दोबारा हल कर सकते हैं। छात्र कक्षा में बुनियादी समझ, प्रश्नों और अपने ज्ञान को अगले स्तर तक ले जाने की तत्परता के साथ आते हैं।

छात्र–केंद्रित शिक्षण और वैयक्तिकरण न केवल वर्तमान समय की मांग है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण और जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान करने की अनिवार्यता भी है। छात्र–केंद्रित और वैयक्तिकरण शिक्षण के माध्यम से छात्रों का शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, नैतिक चरित्रात्मक एवं सामाजिक विकास करके सर्वांगीण विकास किया जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप देश को अच्छे आदर्श नागरिक प्राप्त होते है। क्योंकि आदर्श नागरिक से ही देश की पहचान होती है है। छात्र–केंद्रित शिक्षण और वैयक्तिकरण शिक्षा को केवल परीक्षा–आधारित व्यवस्था से आगे बढ़ाकर विद्यार्थियों को जिम्मेदार, सृजनशील, सहयोगी और आत्मनिर्भर नागरिक बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

01. Anderson, T., & Dron, J. (2011). Three generations of distance education pedagogy. The International Review of Research in Open and Distributed Learning, 12(3), 80–97.
02. Dewey, J. (1938). Experience and education. Macmillan.
03. Horn, M. B., & Staker, H. (2015). Blended: Using disruptive innovation to improve schools. Jossey-Bass.
04. Kumar, K. (2005). Political agenda of education: A study of colonialist and nationalist ideas. Sage Publications.
05. Mishra, R. C. (2005). Educational research and measurement. APH Publishing Corporation.
06. National Education Policy 2020. (2020). Ministry of Education, Government of India. https://www.education.gov.in/nep2020
07. Rogers, C. R. (1969). Freedom to learn. Charles E. Merrill Publishing Company.
08. UNESCO. (2020). Education in a post-COVID world: Nine ideas for public action. UNESCO Publishing.